मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में अस्मिता विमर्श

प्रा.डॉ.गोरखनाथ किर्दत
सहायक प्राध्यापक,
हिंदी विभाग,
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, इस्लामपुर

व्यक्ति की अस्मिता को उसके सामाजिक संदर्भों मे ही परखा जा सकता है। किसी भी व्यक्ति या उसकी अस्मिता का समग्र अध्ययन उसके सामाजिक संदर्भ के बिना नहीं किया जा सकता। स्वतंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों मे अनेक विमर्शों की चर्चा हो रही हैं। आज दलित और स्त्रियों की समस्याओं को बहस के केंद्र मे लाने का प्रयास हो रहा है। स्त्रियों की अस्मिता को लेकर बहुत–सी लेखिकाएँ लिख रही हैं जिनमें मैत्रेयी पुष्पा एक प्रमुख लेखिका है।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासो में निजी, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं से जूझती नारी के विविध रूप उभरकर सामने आते हैं। मैत्रेयी ने जिन उपन्यासों मे स्त्री प्रश्न को लेकर चिंतन के गहरे अयामों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है उनमें 'बेतवा बहती रहे', 'इदन्नमम', 'चाक', 'झूलानट', 'अल्मा कबूतरी' तथा 'विजन' आदि प्रमुख हैं।

'बेतवा बहती रही' उपन्यास नारी के त्याग और शोषण को चित्रित करता है। उपन्यास की नायिका उर्वशी है। निर्धन परिवार मे जन्म होने के कारण वह पढ–लिख नहीं सकती। उसके घर में उसके भाई का अधिकार रहता है। वह अपनी बहन उर्वशी की शादी ऐसे परिवार में करना चाहता है जहाँ कोई खर्च न करना पडे। फिर भी माँ–बाप उसकी सहेली मीरा के नाना–नानी की मदद से अच्छे परिवार में उसकी शादी करते हैं किंतु दुर्भाग्य से उर्वशी के पति की मृत्यु असमय मे ही एक दुर्घटना में हो जाती है। उर्वशी के दूर्दीन शुरू हो जाते हैं। देवर की मदद से वह अपने बेट के साथ जिंदगी काटने लगती है। लेकिन भाई उसकी जमीन हड़पना चाहता है इसलिए उसके देवर पर आरोप लगता है कि उर्वशी को उसने रखैल बनाकर रखा है। देवर की इज्जत पर आँच न आए इसलिए उर्वशी ससुराल छोडकर मायके आकर रहने लगती है। घर में उसकी कोई इज्जत नहीं होती है। ऐसे में भाई अजित उसका पुनर्विवाह मीरा के पिता बरजोरसिंह से करवाता है। बदले में दस बीघे खेत का मालिक बन जाता है– "ऐसो पापी भाई देखो तुमने, बाई। विदा तो होत देखी बिरादरी में पर ऐसो सौदा होत नहीं देखौ। भेड–बकरियों की तरह बेच गऔ कसाई। जैस कछू रिश्ता संबध न होय बहन से।"[1] उर्वशी अपने अन्याय को तो सहन करने के लिए मजबूर है लेकिन वह अपनी बहू पर होनेवाले अत्याचार को सहन नहीं करती।

'चाक' उपन्यास पुरूष व्यवस्था के दमनपूर्ण चरित्र का दस्तावेज है। प्रस्तुत उपन्यास में सिर्फ स्त्री की पराधीनता का चित्र ही नहीं उकेरा गया है बल्कि नारी मुक्ति की आकांक्षा को भी वाणी देने का प्रयास किया है। मैत्रेयी जी ने जिस बखूबी के साथ व्यक्तिगत संपत्ति के चरित्र और औरत की जिंदगी पर उसके प्रभाव को पेश किया है। वह उलझनों को मिटा देने वाला है। इस उपन्यास में स्त्री की आर्थिक समानता और स्वतंत्रता की माँग की गयी है। उपन्यास की प्रमुख स्त्री पात्रों में सारंग रेशम और शकुंतला हैं जिनमें जिवन के हर क्षेत्र में संघर्ष कर अपनी छाप छोड नया इतिहास बनाने की क्षमता दिखाई देती है। उपन्यास में जहाँ एक ओर पितृसत्ता का ऐसा स्वरूप है जो स्त्री के विकास में बाधक है, स्त्री की नियति का नियंता स्वयं को मानता है, उसे निजी संपत्ति मानकर उसके व्यक्तित्व को अपने घर की तिजोरी मे सुरक्षित रखना चाहता है। इस विचार धारा के पक्षधर है–ग्राम प्रधान फत्तेसिंह, साधजी, दरोगा गिरिश त्यागी, रजीत जैसे पुरूष, वही दूसरी ओर श्रीधर, गजाधर और भँवर जैसे पुरूष भी है जिनके लिए स्त्री पहले मनुष्य है और वह उन सभी मानवीय अधिकारों की अधिकारिणी है जो पुरूषों के पास हैं। उपन्यास की नायिका सारंग का चरित्र पुरूष वर्चस्ववादी विचारो का विरोध कर नारी अस्मिता की पुरजोर हिमायत करता है। वह श्रीधर के पास अपने विचारो को मुक्त रूप से रख सकती है। यही कारण है कि अपने पति के होते हूए भी वह श्रीधर के प्रति आकर्षित होती है। वह मन मे सोचती है – "मैं कैसे कहूँ रंजीत से की मेरी जिंदगी सूनी थी, घायल थी, वे आऐ तो लगा घूटन भरे आसमान को फोडकर हवा का कोई ताजा झोंका आया है जो मेरे भीतर नयी साँसे, घावों पर शीतल मरहम और सूनसान मे भेजे। तुम इसे कोई भी नाम दो। ज्ञान–ध्यान कहो या प्यार प्रीति।"[2] श्रीधर जो गाँव के स्कूल में मास्ट है, जिसका सारंग से अत्मिक प्रेम है उसकी शक्ति और प्रेरणा बनकर उसे हरपल आगे बढने के लिए प्रेरित करता है। उसका प्रेम विध्वंसक नहीं सृजनात्मक है। यही कारण है कि ग्रामप्रधान के चुनाव में सारंग को खड़ा करने के लिए वह प्रयास करता है।

चाक की प्रधान स्त्री पात्र स्वेच्छा से जीने के लिए, स्वेच्छा से वर तलाशने के लिए, आनी भावनाओं और इच्छाओं का सम्मान किए जाने के लिए संघर्षरत हैं। मैत्रेयी के स्त्री पात्र पितृसत्ताक व्यवस्था से लडते हुए लीक से हटकर भी समाज से भगते नहीं बल्कि अपने जगह की तलाश करती हैं। उसका निर्माण करती है। चाक की रेशम अपने देह की स्वाधीनता की पहल करती है। वह एक विधवा स्त्री होते हुए भी परपुरूष से संबंध स्थापित करती है और अजन्मे बच्चे को अपना नाम देना चाहती है। उसी तरह सारंग और श्रीधर के प्रेम संबंधो के द्वारा नारी अस्मिता की पेशकश नए सिर से की गयी है।

'अल्मा कबुतरी' आदिवासी जीवन को केंद्र में रखकर लिखा गया उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास मे बुंदेलखंड की विलुप्त होती और अपराधी कही जाने वाली जनजातियों के लोग, लुगाइयों उनके प्रेम संबंध झगडे और शौर्य की कथा भावनात्मक संवेदनशीलता से उद्घाटित की है। उपन्यास की स्त्री पात्र अपने उपर हो रहे शोषण एव अत्याचार का सिर्फ विरोध ही नहीं करती बल्कि अपनी जाति पर किए जा रहे अत्याचारों का बदला लेने के लिए खुद को दांव पर लगा देती

Scanned by CamScanner

हैं। भूरी कदमबाई, अलमा तीन पीढ़ियों में एक ही तरह की आग दिखाई दती है। परिवर्तन समय के साथ धीरे–धीरे होता है इसलिए भूरी की अगुवाई में कदमबाई और कदमबाई की अगुवाई में अल्मा ने वह किया जो उनकी जाति के मर्दों ने कभी सोचा भी नहीं था। अल्मा तुफानी लहरों के साथ बहती रही, लहरों के थपेड़ों ने उसे कभी यहाँ पटका, कभी वहाँ, वह हिम्मत न हारी। दुश्मन के गढ़ मे घुसे बिना दुश्मन को मात देना संभव नहीं था। इसलिए अलमा राणी पदमीनी का रस्ता आख्तियार लेती है। वह कहती है– "राणी आज मुझे अल्मा का रूप लेना होगा। उसकी बात माननी होगी। उसे किसी राजा को नही बचाना, साथ में कुचले हुए मरते लोगों का मजमा है, जहाँ अल्मा जाएगी, तुझे चलना होगा। हम राजाओं को मारते निकलते हैं।"[3]

'इदन्नमम' उपन्यास की परित्यक्ता कुसुमा पति द्वारा त्यागने के बाद जेठ अमरसिंह दाऊजू से शरीर संबंध रखने से डरती नही तो निड़र बनकर उसके पुत्र को भी जन्म देती है। कुसुमा अपने स्त्रीत्व की रक्षा के लिए लड़ती है। पत्नी के रूप में ठुकराई जाने के बाद प्रेमिका के रूप में अपनी पहचान बनाती है और संतान को जन्म देकर अपने अस्तित्व और अस्मिता को बचा लेती है।

'कही ईसुरी फाग' स्त्री अस्मिता को नई शक्ति और स्फूर्ति प्रदान करता है। यह केवल फगवारे ईसुरी और उसकी प्रेमिका रजऊ की प्रेम कहानी न होकर स्त्री–पुरूष के दुःखद संबंधों के साथ ही स्त्री के साहस, संघर्ष और मुक्ति की गाथा भी है। रज्जो–बहन, बेटी, बहू के रूप में अपनी सारी जिम्मेदारियाँ निभाती है, बावजूद इसके उसका स्वतंत्र अस्तित्व कहीं भी दिखाई नहीं देता। अतः प्रेम में व्याकुल रज्जो ईसुरी की एक झलक पाने के लिए घर छोड़कर भाग जाती है। 'विजन' उपन्यास की डॉ. आभा द्विवेदी भी स्वाभिमानी नारी है। वह पति से सहयोग और प्यार पाना चाहती हैं, परंतु उसका पढ़ा–लिखा उच्चशिक्षित डॉ. पति मुकुल उसकी भावनाओं को समझ नहीं पाता। तथा पत्नी को मार–पिटकर अपना पौरूषी धाक उसपर जमाना चाहता है तो डॉ. आभा अपने पति का खुलकर विरोध करती है। वह उससे अलग होना पसंद करती है। इसलिए कहती है – "मुकुल, आई वांट अ डायवोर्स, क्योंकि कोई कितना ही प्यार क्यों न हो, अगर धोख देता है तो ..... कोई कितना भी अपना क्यों न हो, अगर यातना देता है तो ..... मुकुल, किसी को हक नहीं कि दूसरे को ऐसा सदमा दे कि उसका संतुलन बिगड़ने लगे।"[4] डॉ. आभा पुरूष वर्चस्ववादी समाज के खोखले आदर्श को तोड़ना चाहती हैं। कहना न होगा की मैत्रेयी के उपन्यासों की नायिकाएँ यथास्थिति से उभरकर अपने अस्तित्व और अस्मिता को बचाना चाहती हैं। इन नारी पात्रों में आत्मविश्वास, साहस एवं अटूट धैर्य दिखाई देता है। यही कारण है कि मैत्रेयी के उपन्यासों में पितृसत्ता की चक्की में सदियों से पिस रही स्त्री को जुबान मिली है।

संदर्भ संकेत –

1) मैत्रेयी पुष्पा – बेतवा बहती रही, पृ. 123
2) वहीं – चाक पृ. 210
3) वहीं – अल्मा कबुतरी पृ. 347
4) वहीं – विजन – पृ. 129

Scanned by CamScanner